वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

शुक्रवार, आषाढ कृष्ण पक्ष, अमावस्या, कलियुग वर्ष ५१२३ (९ जुलाई, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

आजका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

९ जुलाई २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२३ / विक्रम संवत – २०७८ / शकवर्ष - १९४३.....आजके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/aaj-ka-panchang-09072021

देव स्तुति

नमोस्तु नालीक निभाननायै नमोस्तु दुग्धौदधि जन्म भूत्यै।
नमोस्तु सोमामृत सोदरायै नमोस्तु नारायण वल्लभायै॥

अर्थ : कमलवदना कमलाको नमस्कार है। क्षीरसिन्धु सभ्यता श्रीदेवीको नमस्कार है। चन्द्रमा और सुधाकी सगी बहनको नमस्कार है। भगवान नारायणकी वल्लभाको नमस्कार है।

श्रीगुरु उवाच

अरबपतिका अपव्ययी पुत्र और हिन्दू !

'एक अरबपतिका पुत्र अपनी पूरी सम्पत्ति गंवा दे, उसी प्रकार हिन्दुओंकी पूर्व पीढियोंने पूरी धर्मसम्पत्ति मिट्टीमें

मिला दी है !' **- परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले, संस्थापक, सनातन संस्था**

साभार : मराठी दैनिक सनातन प्रभात

(https://sanatanprabhat.org)

शास्त्र वचन

न हृष्यात्मसम्माने नावमानेन तृप्यते।
गांगो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते॥

अर्थ : जो अपना आदर होनेपर हर्षके मारे फूल नहीं उठता, अनादरसे सन्तप्त नहीं होता तथा गंगाजीके ह्रदके (गहरे गर्तके) समान जिसके चित्तको क्षोभ नहीं होता, वही पण्डित कहलाता है।

****

प्रियाप्रिये सुखदुःखे च राजन्
निन्दाप्रशंसे च भजन्त एव।
परस्त्वेनं गर्हयतेऽपराधे
प्रशंसते साधुवृत्तं तमेव॥

अर्थ : संजय, धृतराष्ट्रसे कहते हैं, "राजन् ! इस जगतमें प्रिय - अप्रिय, सुख-दुःख, निन्दा-प्रशंसा आदि मनुष्यको प्राप्त होते ही रहते हैं । इसीलिए आपलोग अपराध करनेपर अपराधीकी निन्दा करते हैं और जिसका व्यवहार उत्तम होता है, उस साधुकी प्रशंसा करते हैं।

धर्मधारा

१. जिस प्रकारके उत्तरदायित्वहीन, सत्तालोलुप राजनेता इस देशको स्वतन्त्रताके पश्चात मिले थे, यदि वैसी ही वृत्ति हमारे सेनाके सैनिकोंकी होती तो आज देशकी स्थिति और भी दयनीय होती !

२. भारतकी प्रतिष्ठा बचाने हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना है अनिवार्य

स्वतन्त्रता पश्चात हमारे राज्यकर्ता इस देशकी प्रतिष्ठाको बचाने हेतु कभी प्रयत्नशील नहीं रहे; क्योंकि शास्त्र कहता है, 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतम् संस्कृतिस्तथा' अर्थात भारतकी प्रतिष्ठा दोमें निहित है, संस्कृति और संस्कृत। यह सर्वविदित है कि इस देशके शासकोंने संस्कृत भाषाको एक षड्यन्त्रके अन्तर्गत इस देशकी प्रजासे विमुख रखा; क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि भारतीय संस्कृतिका ज्ञान संस्कृतके बिना असम्भव है; अतः उन्होंने इस आधारको ही नष्ट करनेका प्रयास किया और आज स्वतन्त्रताके सात दशक पश्चात भी यह सुसंस्कृत भाषा, अब बुद्धिजीवियोंके मध्य भी न बोली जाती है और न ही समझी जाती है। इसके साथ ही आजके राज्यकर्ता, पाश्चात्यवाद एवं मुसलमानोंका तुष्टीकरणकर, इस दैवी वैदिक संस्कृतिको नष्ट कर रहे हैं। इस स्थितिको परिवर्तित करने हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना अपरिहार्य हो गया है; क्योंकि हिन्दू राष्ट्रमें संस्कृत एवं वैदिक संस्कृति, दोनोंको राज्याश्रय मिलेगा एवं इनका संवर्द्धन होगा।

****

३. वास्तुमें अत्यधिक दोष होनेपर उस वास्तुका त्याग करना ही उचित

अप्रैल २०१३ में धर्मयात्राके मध्य बंगालके कोलकाता महानगरमें कोलकातामें मेरी सखीके घर जाना हुआ।

उसके घर जानेपर मुझे वहां सांस लेनेमें कष्ट होने लगा। सूक्ष्म परीक्षण करनेपर ज्ञात हुआ कि उनके वास्तुमें अत्यधिक कष्ट था, जिसकारण मुझे ऐसा हो रहा था। वे एक वैश्य परिवारसे थीं और उनका वह घर पैतृक घर था एवं उनका

संयुक्त परिवार था । यद्यपि सबकी रसोई पृथक थी । मुझे होनेवाले कष्टसे ज्ञात हो रहा था कि उनका वह भवन भुतहा था; इसलिए मैंने उससे उस घरके इतिहास और वहां रहनेवाले लोगोंके कष्टके विषयमें जानना चाहा । उससे वार्तालाप करते समय ज्ञात हुआ कि उनका यह भवन जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्थामें था और उसे किसी प्रकार रहने हेतु ठीक किया गया था, वह सौ वर्ष पुराना था ।

उसमें प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कुटुम्बके सदस्यकी अकाल मृत्यु अवश्य होती थी । यहांतक कि उसकी सास और उसकी प्राणघातक दुर्घटना पांच वर्ष पूर्व हुई थी, जिसमें उसकी सासकी तो मृत्यु हो गई थी और उसे भी मृत्युतुल्य कष्ट हुआ था और वह किसी प्रकार बच पाई थी ।

उसके पतिका व्यापार भी ठीकसे नहीं चलता था और उसके दस वर्षके पुत्रको 'थाइरोइड' नामक रोग हो गया था ।

मैंने उससे कहा कि या तो आप सब किसी सन्तके मार्गदर्शनमें साधना व सेवा करें या इस घरको तवरित त्याग दें ! उन्होंने कहा हमारे पति और ससुर तो किसी भी स्थितिमें साधना नहीं करेंगे वे जो परम्परागत साधना हमारे कुलमें होती है, वह भी नहीं करते हैं तो किसी सन्तके मार्गदर्शनमें साधना करेंगे, ऐसा लगता तो नहीं है । तो मैंने कहा उन्हें वास्तुशास्त्र अनुसार किसी नूतन बने घरमें जाने हेतु कहें !

उन्होंने वैसा ही किया ।

ध्यान रहे यदि घर बहुत पुराना हो गया हो और वह जीर्ण-शीर्ण हो जाए और उसमें अकाल मृत्यु होने लगे, अत्यधिक क्लेश होने लगे, व्यापारमें हानि होने लगे तो उस घरमें अनिष्ट शक्तियोंका अत्यधिक कष्ट है, ऐसा समझना चाहिए और उस घरको शीघ्र छोड देना चाहिए ।

हमारे श्रीगुरुके अनुसार कलियुगमें किसी वास्तुमें अधिकसे अधिक १०% कष्ट हो सकता है। यदि कष्टका प्रमाण ७% हो तो वह रहने योग्य नहीं होता है। मेरी उस सखीके घरमें भी ६% कष्ट था; इसलिए मैंने उसे या तो कुटुम्बके सब सदस्य योग्य साधना करें या वे घर छोड दें, ये दो विकल्प दिए थे।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

विशेष लेख

समुद्र मन्थनसे निकले १४ रत्नोंके नाम तथा उनकी महत्ता (भाग-२)

८. देवी लक्ष्मी : भगवान विष्णुके द्वारा समुद्र मन्थनका एक प्रमुख उद्देश्य देवी लक्ष्मीको पुनः प्राप्त करना था। जब वे सृष्टिके सञ्चालनमें व्यस्त थे, तब देवी लक्ष्मी समुद्रमें विलीन हो गई थीं। समुद्रका मन्थन हुआ, तब देवी लक्ष्मी पुनः बाहर आ गईं। उन्होंने बाहर आनेके पश्चात स्वयं जाकर भगवान विष्णुका चयन किया।

९. वारुणी : समुद्र मन्थनसे अथाह मात्रामें मदिराकी उत्पत्ति हुई, जिसे वारुणी नाम दिया गया। वरुणका अर्थ जलसे होता है; इसलिए समुद्रके जलसे निकले होनेके कारण इसका नाम वारुणी रखा गया। भगवान विष्णुके आदेशपर इसे असुरोंको दे दिया गया। इसलिए ही हम पाते हैं कि असुर सदैव मदिराके (शराबके) मदमें ही डूबे रहते थे।

१०. चन्द्रमा : इसी समुद्र मन्थनमें चन्द्रमाकी भी उत्पत्ति हुई थी, जलसे निकले होनेके कारण ही इन्हें जलका कारक कहा जाता है। इन्हें स्वयं भगवान शिवने अपनी जटाओंमें धारण किया था।

११. पाञ्चजन्य शङ्ख : समुद्र मन्थनके मध्य ही पाञ्चजन्य शङ्खकी उत्पत्ति हुई, जो शङ्खोंमें प्रमुख है । शङ्खको सनातन धर्ममें अति शुभ कार्यमें प्रयोगमें लिया जाता है तथा मन्दिरों, पूजास्थल इत्यादिमें यह पाया जाता है । यह शङ्ख, भगवान विष्णुको प्राप्त हुआ तथा मान्यता है कि जहां शङ्ख होता है, वहीं माता लक्ष्मीका भी वास होता है । इस शङ्खकी ध्वनिको अत्यधिक शुभ माना गया है ।

१२. पारिजात : समुद्र मन्थनके समय एक और दिव्य औषधियोंसे युक्त वृक्ष निकला, जिसे पारिजात वृक्षके नामसे जाना जाता है । यह वृक्ष इतना अधिक चमत्कारी था कि इसको छूने मात्रसे ही शरीरकी सारी थकान मिट जाती थी । देवी-देवताओंकी पूजाके समय पारिजात वृक्षके पुष्प चढाना शुभ माना जाता है ।

१३. शारङ्ग धनुष : यह एक चमत्कारिक धनुष था, जो भगवान विष्णुको प्राप्त हुआ था । कहते हैं कि इसे स्वयं भगवान विश्वकर्माने बनाया था ।

१४. भगवान धन्वन्तरि तथा अमृत कलश : अन्तमें भगवान धन्वन्तरि, अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे । वे अमृतको असुरोंसे बचानेके उद्देश्यसे आकाशमें उड गए; किन्तु असुरोंने अपनी तीव्र गति एवं शक्तिसे उन्हें पकड लिया तथा अमृत कलशको छीन लिया । इसके पश्चात भगवान विष्णुने मोहिनी रूप धरकर इस कलहको समाप्त किया तथा देवताओंको अमृतपान करवाया ।

समुद्र मन्थन क्यों हुआ था ?

कुछ समय पूर्व ही नूतन कल्प तथा सतयुगका आरम्भ हुआ था । भगवान विष्णुने अपने प्रथम अवतार, मत्स्य अवतारके माध्यमसे नयी सृष्टिकी रचना की थी तथा मानव

जातिका कल्याण किया था; किन्तु प्रलयके कारण सृष्टिकी बहुमूल्य वस्तुएं समुद्रमें विलीन हो गईं थीं, जिनमेंसे एक स्वयं माता लक्ष्मी भी थीं।

इन सभीका पृथ्वी तथा मानव सभ्यताके कल्याणके उद्देश्यसे बाहर आना आवश्यक था। यह कार्य भगवान विष्णु, मात्र देवताओंके माध्यमसे नहीं कर सकते थे, इस हेतु देवता व दानवों, दोनोंकी आवश्यकता थी, जो समुद्रको मथनेका कार्य कर सके।

भगवान विष्णुने सभी व्यवस्था कर दी; किन्तु जब समुद्र मथनेका कार्य आरम्भ हुआ, तब मन्दार पर्वत निरन्तर नीचे जा रहा था। जिस कारण समुद्रको मथनेका कार्य असम्भव प्रतीत होने लगा। उस मन्दार पर्वतको विशाल समुद्रकी गहराइयोंमें जानेसे मात्र भगवान विष्णु ही रोक सकते थे। इसके लिए उन्होंने कछुएका अवतार लेनेका विचार किया; क्योंकि उसकी पीठ कठोर होती है।

इसी कारण भगवान विष्णुने अपना दूसरा अवतार, कछुएके रूपमें लिया तथा मन्दार पर्वतको अपनी पीठपर धारण किया, जिससे समुद्र मन्थनका कार्य सम्पन्न हो सका।

प्रेरक प्रसंग

क्षमा करना है खरा बडप्पन

एक सेठके दो पुत्र थे। दोनों अब युवा हो चुके थे। सेठने सोचा कि अपने दोनों पुत्रोंका विवाह कर अब वह इस मोह-मायाके संसारसे अलिप्त होकर सत्संग करेगा और अपना शेष जीवन मथुरा और वृन्दावनमें जाकर बिताएगा।

कुछ दिनोंके पश्चात उसने बडे धूमधामसे अपने दोनों बेटोंका विवाह करवा दिया। विवाहके कुछ दिनों पश्चात ही

उसके दोनों पुत्रोंमें आपसमें लडाई-झगडे होने लगे। एक दिवस तो दोनों पुत्रोंने पृथक रहनेकी ठान ली।

उनकी सारी सम्पत्तिके साथ 'दुकान'का भी बंटवारा हो गया। दोनोंकी 'दुकान'का एक ही स्थान था, केवल 'दुकान'के भीतर एक भीतका (दीवारका) अन्तर था। दोनों भाई प्रतिदिन 'दुकान'से आते-जाते परस्पर मिलते-जुलते; परन्तु बात नहीं करते। ऐसा करते-करते कई वर्ष व्यतीत हो गए।

छोटे भाईने अपनी पुत्रीका विवाह निश्चित कर दिया था। छोटे भाईकी पत्नीने कहा, "हमें आपके बडे भाईको अपनी पुत्रीके विवाहमें अवश्य बुलाना चाहिए। अन्ततः हैं तो आपके बडे भाई, सम्बन्ध कभी समाप्त नहीं होते हैं।" उन्होंने बडे भाईको बुलाया; परन्तु बडे भाईने विवाहमें आनेसे मना कर दिया। जिससे छोटा भाई बहुत दुखी हुआ।

उसने अपनी पत्नीसे कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा है कि कैसे भाईको मनाया जाए ?"

छोटे भाईकी पत्नीने कहा, "कुछ दिनोंसे हमारे नगरमें एक सन्त आए हैं, आपके बडे भाई उन्हींके यहां सत्संग सुनने जाते हैं। मैं तो कहती हूं जाकर आप सन्तसे मिलिए ! वह उनकी बात नहीं टालेंगे।"

छोटे भाईने ऐसा ही किया। वह सवेरा होते ही उस सन्तके पास गया और उसने अपनी सारी बात बताई और उनसे प्रार्थना की कि वे उसके भाईसे बातकर विवाहमें आनेको मना लें और वर्षों पुरानी बातें भुला दें ! सन्तने उसे आश्वासन दिया।

अगले दिवस जब बडा भाई सन्तके आश्रममें पहुंचा तो सन्त बोले, "अरे ओ भाई धर्मचंद ! मैंने सुना है कि तुम्हारे छोटे भाई करमचंदके यहां उसकी पुत्रीका विवाह है। मैं सोच रहा हूं

कि तुम्हारे साथ मैं भी तुम्हारे छोटे भाईकी पुत्रीके विवाहमें सम्मिलित होऊं।"

धर्मचंदने क्षमा मांगी और कहा कि छोटे भाईने विवादके मध्य उससे बहुत ही कडवे वचन कहे थे जो आजतक उसके हृदयमें चुभते रहते हैं।

सन्तने कहा, "ठीक है ! कोई बात नहीं। वह पहले सत्संग सुने; परन्तु घर जानेसे पहले एक बार उनसे मिलकर जाए।"

सत्संगके समाप्त होनेपर धर्मचंद सन्तजीके पास गया। सन्तजीने धर्मचंदसे पूछा, "अच्छा ! मुझे यह बताओ पिछले रविवारको मैंने क्या सत्संग सुनाया था ? क्या वह तुम्हें स्मरण है ?" धर्मचंद मौन खडा रहा और बोला, "सन्तजी यहांसे जानेके पश्चात मैं अपने व्यापारमें इतना व्यस्त हो जाता हूं कि मुझे कुछ स्मरण ही नहीं रहता है।"

सन्तजीने कहा, "देखो भाई धर्मचंद ! यही तो बात मैं तुम्हें बताना चाहता हूं। जब तुम मेरी बताई अच्छी बात एक सप्ताहमें ही भूल गए और तुम्हारे भाईने कई वर्ष पूर्व इतने कडवे वचन बोले थे; परन्तु अभीतक तुमने उनका स्मरण कर रखा है और कहते हो कि वह मेरे हृदयमें कांटोंकी भांति चुभ रहे हैं। मेरे भाई धर्मचंद ! जब तुम अच्छी बातको स्मरण नहीं रख सकते तो बुरी बात स्मरण रखनेका क्या लाभ ? उसे तो जीवनमें ऐसे ही भूल जाना चाहिए। मुझे तो लग रहा है कि तुम्हें सत्संगमें आनेसे कोई लाभ ही नहीं हो रहा है; इसीलिए कलसे तुम मत आया करो।"

धर्मचंदकी आंखें खुल गईं और उसने अपनी चूक स्वीकार की और सन्तजीके चरणोंमें गिर गया और बोला, "स्वामीजी, मैं आज ही अपने छोटे भाईके घर जाऊंगा और

छोटे भाईकी पुत्रीके विवाहका पूरा उत्तरदायित्व मैं ही लूंगा।"

(संकलन - रिम्पल गुप्त जालन्धर, पंजाब)

घरका वैद्य

बहेडा (भाग-७)

बहेडाके पेडमें है 'इम्यूनोमॉड्यूलेटरी' प्रभाव : बहेडाके पौधोंमें 'इम्यूनोमॉड्यूलेटरी' प्रभाव होता है। 'इम्युनोमोडुलेटर' वे यौगिक तत्त्व होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणालीके कार्यको नियन्त्रित या विनियमित करने और सामान्य करनेमें सहायता करते हैं।

बहेडा फलका 'एसीटोन' अर्क 'B' और 'T' सेलके प्रसारको बढावा देता है। ये दोनों कोशिकाएं अनुकूल प्रतिरक्षा प्रणालीका एक भाग हैं। इसका तब विकास होता है, जब हम संक्रामक जीवोंके सम्पर्कमें आते हैं। यह किसी भी बाहरी हानिकारक पदार्थके सम्पर्कमें आनेसे होनेवाली 'सूजन' और लालिमाको न्यून करनेमें भी प्रभावशाली पाया गया है।

विशेषज्ञोंका मानना है कि बहेडाके पौधेमें 'इम्यूनोमाड्यूलेटरी' प्रभाव इसलिए है; क्योंकि इसमें 'गैलिक एसिड' होता है। 'गैलिक एसिड' 'मैक्रोफेज'के (प्रतिरक्षा प्रणालीकी कोशिकाओंके एक प्रकारके) 'फागोसिटिक एक्शन'को ('इंगल्फिंग' रोगजनकोंको) बढानेमें सहायता करता है।

चूहोंपर किए गए एक अन्य अध्ययनमें ज्ञात हुआ है कि बहेडा विशिष्ट (विशिष्ट रोगजनकोंके विपरीत) और विशिष्टरहित प्रतिरक्षा प्रतिक्रियामें भी सुधार करता है। बहेडाका अर्क 'ह्यूमरल इम्यून'को उत्तेजित करता है।

निर्माता, निर्देशक, अल्पसङ्ख्यकोंके आराध्यको कभी लक्ष्य नहीं बनाते, सत्यनारायणकी कथाके विरुद्ध मन्त्रीने दिए जांचके निर्देश

मध्य प्रदेशमें 'सत्यनारायण की कथा' चलचित्रका अत्यन्त विरोध होनेके उपरान्त अब इस प्रकरणमें गृहमन्त्री नरोत्तम मिश्रने 'डीजीपी'को कार्यवाही करनेके निर्देश दिए हैं। सम्भव है कि जांचके पश्चात निर्माता, निर्देशकके विरुद्ध परिवाद प्रविष्ट हो। राज्य गृहमन्त्रीने यह जानकारी 'मीडिया'के प्रश्नोंके उत्तर देते हुए दी।

नरोत्तम मिश्रने सत्यनारायण कथा चलचित्रके विषयमें कहा कि निर्माता, निर्देशक हिन्दू देवी देवताओंको लक्ष्य करना बन्द करें। अल्पसङ्ख्यकोंके आराध्यको कभी लक्ष्य नहीं करते। पुलिस महानिदेशकको निर्देश दे रहा हूं कि वे इस प्रकरणमें जांचकर आगेकी कार्यवाही करें। जांचके पश्चात इस चलचित्रके निर्देशक व निर्माताके विरुद्ध परिवाद प्रविष्ट कर सकते हैं।

हिन्दी चलचित्रोंके निर्माता एवं निर्देशक अपनी हिन्दू विरोधी और निकृष्ट मानसिकताके आधारपर यह कृत्य करते हैं; अतः इन चलचित्र निर्माताओंको त्वरित दण्ड मिलना चाहिए और सभी हिन्दू ऐसे चलचित्रोंका बाहिष्कार करें। (०६.०७.२०२१)

****

कचौडी लेने गए युवकपर तहसीमने फेंका उबलता तेल, मुख जलनेके पश्चात आरोपी पिता-पुत्र भागे

उत्तर प्रदेशके मेरठमें एक कचौडीका व्यवसाय करनेवाले

युवकके साथ भयावह घटना घटी है । प्रतिष्ठानपर पहुंचे एक नवयुवकपर प्रतिष्ठान स्वामीके पुत्रने उबलता तेल डाल दिया, जिससे युवकका सम्पूर्ण मुख जल गया । पीडित युवककी त्रुटि यह थी कि उसने प्रतिष्ठान स्वामीके पुत्रके साथ वाद- विवाद कर लिया था ।

घटना मेरठके लिसाडी गेटके एक क्षेत्रकी है । वहां नौशाद नामका युवक कचौडी लेने तहसीमके प्रतिष्ठानपर गया था; परन्तु वहां दोनोंका किसी विषयको लेकर वाद-विवाद हो गया । विवादके मध्य नौशादपर उबलता तेल फेंक दिया, जिससे अवस्यकका मुख, सिर, एवं और छाती जल गए । इसके पश्चात आरोपी समय देखकर भाग गया ।

जिहादी युवक व उनके परिजन सामान्यसी त्रुटिपर भी अपने ही समुदायके लोगोंको कष्ट पहुंचाते हैं, तो हिन्दुओंकी क्या दुर्दशा करते होंगे ? किञ्चित विचार करें ! ये सभ्य समाजमें रहने योग्य ही नहीं हैं । (०७.०७.२०२१)

****

कोरोनाको 'चीनी वायरस' लिखनेपर हर्षा भोगलेपर क्रोधित हुए कथित 'लिबरल'

'क्रिकेट कॉमेंट्री' जगतके परिचित व्यक्ति हर्षा भोगलेने इंग्लैंडकी 'क्रिकेट टीम'के सङ्क्रमित होंनेपर चीनी 'वायरस' शब्दका उपयोग किया । इससे 'लिबरल' तथा साम्यवादी क्रोधित हो गए ।

किसीने उन्हें सभ्यतासे ऐसा न कहनेकी सीख दी, तो किसीने उनकी तुलना डोनाल्ड ट्रम्पसे कर दी । कुछ ऐसे भी थे, जो ऐसा लिखनेपर आनन्दित थे ।

हर्षा भोगलेने भी त्वरित उत्तर देते हुए लिखा कि

अभीतक मैंने दक्षिण अफ्रीकी 'वैरिएंट', ब्राजील 'वैरिएंट' तथा भारतीय 'वैरिएंट' शब्द सुने हैं; इसीलिए मैंने मूल नामका उल्लेख किया।

उल्लेखनीय है कि अनेक वैज्ञानिकोंद्वारा यह माना गया है कि इस घातक सङ्क्रमणकी उत्पत्ति चीनके वुहानकी प्रयोगशालामें वैज्ञानिकोंद्वारा की गई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इसे चीनी 'वायरस' न कहनेका परामर्श देता है; परन्तु जब लोग इसे अफ्रीकी, ब्राजीलियन तथा भारतीय 'वैरिएंट' कहते हैं, तो उदारवादी भी इसपर आपत्ति नहीं करते। यह दुःखद है कि भारतमें ही कुछ देशद्रोही हैं, जो चीनके पक्षधर हैं। (०७.०७.२०२१)

****

मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथके भयके प्रभावसे अपराधी ५ जिहादी अपराधियोंने किया 'पुलिस'को समर्पण

विगत अनेक दिवसोंसे 'फरार' चल रहे उत्तर प्रदेशके ५ कुख्यात अपराधियोंने मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथके भयसे सोमवार, ५ जुलाईको शामली जनपदमें 'पुलिस'को आत्मसमर्पण कर दिया । 'पुलिस'के सामने आनेसे पूर्व अपराधियोंने कहा कि वे सभी आपराधिक गतिविधियोंको त्यागना चाहते हैं; इसलिए उन्होंने आत्मसमर्पण करनेका निर्णय लिया है।

'पुलिस रिकॉर्ड'के अनुसार, ग्राम रामडाके निवासियोंका अफसरून, कय्यूम, राशिद, सलीम और हारूनके रूपमें अभिज्ञान हुआ। सभी ५ अपराधियोंपर रंगदारी और हत्याके कई प्रकरण प्रविष्ट थे । वहीं रविवार ४ जुलाईको महबूब नामका एक अन्य अपराधी भी मुजफ्फरनगरके शाहपुर पुलिस

थाने पहुंचा और अपराध नहीं करनेका सङ्कल्प लिया।

उल्लेखनीय है कि सोमवारको राप्ती नदीके मलौनी बांधपर स्थित तारकुलानी रेगुलेटरपर 'पम्पिंग स्टेशन'के उद्घाटन समारोहके मध्य मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथने लोगोंको सम्बोधित किया था। इस मध्य मुख्यमन्त्रीने राज्यमें अपराध और अपराधियोंके प्रति अपने शासनकी शून्य संवेदना (जीरो टॉलरेंस) नीतिपर जनताका मत (राय) मांगा था।

उत्तर प्रदेश प्रशासनकी अपराधियोंके प्रति कार्यवाही उत्कृष्ट है। सभी राज्य व राष्ट्रके प्रशासनकर्ता भी उत्तम प्रकारसे राजधर्म निभाए, ऐसी उनसे अपेक्षा है। (०६.०७.२०२१)

****

गोमांस तस्करोंको पकडने गई उत्तर प्रदेश 'पुलिस'पर आक्रमण, एक जिहादी बन्दी बनाया

उत्तर प्रदेशके उन्नावके आसीवान थाना क्षेत्रके एक गांवमें गोमांस तस्करीका प्रकरण आया है।

दैनिक जागरणके अनुसार, थाना क्षेत्रके लखनऊ-बांगरमऊ मार्गपर बने मुरव्वतपुर तिराहेके निकट गोवंशकी हत्याकर उनके मांसका व्यापार किया जा रहा था। जब 'पुलिस'को इसकी सूचना हुई तो वह मंगलवार, ६ जुलाई प्रातःकाल ३ बजे पहुंचे; परन्तु तस्करोंने पुलिसको देखकर गोली चला दी।

त्वरित कार्यवाही करते हुए 'पुलिस'ने भी गोलीबारी की। 'पुलिस'से हुई इस भिडन्तमें थानाक्षेत्रके गांव मुशीराबादका रहनेवाला गोमांस तस्कर मजीद पुत्र चोटिल हो गया। पुलिसने उसे स्थानीय चिकित्सालय भेजा, तत्पश्चात जिला

चिकित्सालय भेज दिया गया । पुलिसके अनुसार, उन्हें आरोपीके घरसे अधिक मात्रामें गोमांस मिला है । उसे पकडनेके मध्य चार व्यक्ति भागनेमें सफल रहे, जिनकी खोजमें पुलिस छापा मार रही है।

स्थानीय नागरिकोंने बताया था कि रकमुद्दीनने कथित रूपसे चुनाव जीतनेपर मतदाताओंको 'बीफ पार्टी' देनेका वचन दिया था।

जिहादियोंकी विकृत मानसिकता है कि जब भी कोई अवसर मिले, हिन्दुओंकी पूज्य गोमाताकी हत्याकर गोमांसका भक्षणकर हिन्दुओंकी आस्थापर चोटकर प्रताडित करना। हिन्दू सङ्गठनों एवं हिन्दू समाजको एक पटलपर आकर केन्द्र प्रशासनपर दबाव डालकर गोवंशको संरक्षण करनेका एक कठोर विधेयक बनाकर गोहत्या करनेवालेको मृत्युदण्डका विधान हो, ऐसा सुनिश्चित करना होगा। (०७.०७.२०२१)

****

'सपा' कार्यकर्ताओंने उत्तर प्रदेश शासनके मन्त्रीको दी चेतावनी और कहे अपशब्द

समाजवादी पार्टीके कार्यकर्ताओंका ३ जुलाई २०२१, शनिवारको जनपद (जिला) परिषद चुनाव परिणामके पश्चात एक दृश्यपट 'सोशल मीडिया'पर तीव्रतासे सार्वजनिक हुआ था । इसमें वे उत्तर प्रदेशके मन्त्री उपेंद्र तिवारी और उनके परिवारको अपशब्द कहते हुए दिखाई दिए थे । सार्वजनिक दृश्यपटमें 'सपा' कार्यकर्ता विजयके उद्घोष लगा रहे थे; तत्पश्चात तिवारीके विरुद्ध अपमानजनक उद्घोष करने लगे और उन्होंने उनकी ९० वर्षीय मां, पत्नी और बेटियोंके विरुद्ध

भी अपमानजनक उद्घोष किए।

'एएनआई'को दिए एक वक्तव्यमें उपेंद्र तिवारीने कहा, "मेरी ९० वर्षीय मां, बहन, पत्नी और बेटियोंको उद्घोषके रूपमें अपशब्द कहे गए। तिवारीने कहा कि उन्होंने मुझे अपशब्द कहकर, समाज और लोकतन्त्रको लज्जित करनेकी योजना बनाकर अपनी निराशाके सङ्केत दिए हैं।

योगी आदित्यनाथके सूचना परामर्शदाता शलभ मणि त्रिपाठीने इस घटनाकी निन्दा की है। उन्होंने 'ट्वीट' किया कि कैसे विपक्षी दल 'ट्विटर'पर ब्राह्मण विरोधी 'हैशटैग ट्रेंड' कर रहे थे। उन्होंने कहा, "चुनाव पराजयका रोष देखिए, बलियामें ब्राह्मणोंको अपशब्द कहनेवाले अराजकतावादी आज घृणास्पद 'हैशटैग'का प्रचार कर रहे हैं। यह आश्चर्यजनक है कि 'ट्विटर इंडिया' और मनीष माहेश्वरीने इसमें कुछ भी अनुचित नहीं देखा।"

बलिया पुलिसने त्वरित कार्यवाही करते हुए इस घटनामें पांच 'एसपी' कार्यकर्ताओंको बन्दी बनाया है।

आजके अहंकारी नेता और उनके उन्मादी कार्यकर्ता एक तुच्छ सी विजयका उत्सव मनानेमें सभी राजनीतिक मर्यादायोंको उल्लङ्घन कर जाते हैं। ऐसेमें क्या ये नेता लोकतन्त्रकी रक्षा करेंगे; किञ्चित विचार करें ? हिन्दुओ, आपकी एकतामें ही शक्ति है; अतः सङ्गठनकी शक्तिका अभिज्ञान (पहचान) करें और राजनीतिका अपने स्वार्थ हेतु प्रयोग करनेवाले नेताओं और उनके कार्यकर्ताओंका मुखर होकर विरोध करें तथा हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु सतत प्रयत्नशील रहें। इसमें ही आपका और भावी पीढीका भविष्य निहित है। (०७.०७.२०२१)

महिला सरपञ्चके शान्तिपूर्ण प्रदर्शनपर राजस्थान 'पुलिस'ने चलाई लाठी, अनेक हुए चोटिल

राजस्थानके बीकानेरमें 'पुलिस'की बर्बरताका एक नवीन रूप सामने आया है। वहां जनपदसे लगभग ३५ किलोमीटर दूर गजनेरमें एक गोचर भूमिकी रक्षा करनेके लिए सत्याग्रहपर बैठी महिला सरपञ्च और उनके समर्थकोंपर 'लाठीचार्ज'का प्रकरण प्रविष्ट किया गया है। 'पुलिस"की कार्यवाहीमें कई ग्रामीण चोटिल हुए, जिसके क्रोधमें उनकी (ग्रामीणोंकी) ओरसे भी पथराव हुआ। दोनों ओरसे प्रकरणको बढता देख क्षेत्रमें अधिक 'पुलिस' बल बुलाकर नियुक्ति की गई है।

दैनिक भास्कर विवरणके अनुसार, गजनेरमें एक गोचर भूमि है, जहां नपाई न होनेके कारण यह स्पष्ट नहीं है कि गोचर भूमि कितनी है और शासकीय भूमि कितनी है ? ऐसेमें वहांकी सरपञ्च गीता हकुम्हार गजनेरमें आन्दोलनपर हैं। वह २०० दिनोंसे अपने समर्थकोंके साथ सत्याग्रहपर बैठी हैं; किन्तु प्रशासन उनकी सुनवाई करनेको सज्ज नहीं है।

सोमवार, ५ जुलाईको प्रकरणके सम्बन्धमें 'तहसीलदार' और सरपञ्चकी वार्ता भी हुई; परन्तु कोई निष्कर्ष नहीं निकला, तत्पश्चात, मङ्गलवार ६ जुलाई, को जब प्रशासनसे बात मनवानेके लिए विरोधके लिए विपणि (बाजार) बन्द की गई और प्रदर्शनकारी प्रदर्शनस्थलपर बैठे दिखे, तो 'पुलिस'ने अपनी कार्यवाही की।

ग्रामीण 'पुलिस'की 'लाठीचार्ज'का विरोध कर रहे हैं। उनका आरोप है कि वह लोग २०० दिवससे शान्तिपूर्ण ढंगसे सत्याग्रह दे रहे थे; परन्तु इस सत्याग्रहका निष्कर्ष नहीं निकाल पानेवाले अधिकारियोंके सङ्केतपर आज पुलिसने

'लाठीचार्ज' किया । उनके अनुसार घटनास्थलपर आन्दोलनकारी अल्प थे और 'पुलिस' लठ चलानेवाले कर्मियोंकी सङ्ख्या अधिक थी । घटनास्थलपर महिला 'पुलिसकर्मी' भी उपस्थित थीं । सबने प्रदर्शनकारियोंपर लाठी चलाई ।

यदि यही प्रदर्शन जिहादी करते, तो उनका सहृदय कांग्रेस शासन अवश्य सुनता; परन्तु यहां लोगोंपर लाठियां चलाई जा रही हैं । जो जनताको समझ नहीं सकते हैं, वे क्या शासन करेंगे । नारीवादकी बातें करनेवाले महिला सरपंचपर लाठियां चलवाते हैं, ऐसे लोग केवल ढोंग कर सकते हैं, शासन नहीं । (०६.०७.२०२१)

****

अन्तरधार्मिक विवाहमें बच्चे मुसलमान ही क्यों ? महिला हिन्दू क्यों नहीं रह सकती, किरण-आमिरके सम्बन्ध-विच्छेदपर अभिनेत्री कंगनाने उठाए प्रश्न

शनिवार, ३ जुलाई २०२१ को आमिर खान और किरण रावने भी वैवाहिक सम्बन्ध-विच्छेदकी घोषणा की थी, जिससे उनका १५ वर्षोंका 'निकाह' समाप्त हो गया । किरण राव आमिर खानकी दूसरी पत्नी थीं । इससे पहले रीना दत्तसे आमिर खानने विवाह किया था । १९८६ में हुआ यह विवाह २००२ में समाप्त हो गया था । इसके पश्चात २००५ में आमिर खानने किरण रावसे दूसरा विवाह किया था । आमिर खान और किरण रावने संयुक्त वक्तव्य भी जारी किया था और कहा था कि अब उन्होंने निर्णय लिया है कि अब वे जीवनके नूतन अध्यायका आरम्भ करेंगे; परन्तु पति-पत्नीके रूपमें नहीं ।

अभिनेत्री कंगनाने कहा कि आमिर खान 'सर'के दूसरे

सम्बन्ध-विच्छेदके साथ मैं आश्चर्य चकित हूं कि अन्तरधार्मिक विवाहके पश्चात बच्चा सदैव मुसलमान क्यों होता है ? क्यों एक महिला हिन्दू नहीं रह सकती है ? समयके साथ इस प्रथाको भी परिवर्तित होना चाहिए; क्योंकि यह प्रथा प्राचीन है और अविकासवादी है।

चलचित्र उद्योगमें कंगना रनौत जैसे स्पष्टवादी और कटु सत्य बोलनेवाले कम ही लोग हैं, जिसके लिए वह अभिनन्दनकी पात्र हैं । भारतमें लव-जिहाद चलचित्र उद्योगसे ही आरम्भ हुआ है । निद्रस्त हिन्दू सिनेमामें आनन्दित था, वही सजग मुसलमान बडे सुनियोजित ढंगसे लव-जिहादकर हिन्दू युवाओंका मत-आरोपणकर (ब्रेनवॉश) भारतीय संस्कृतिको नष्ट कर रहा था । चलचित्र उद्योगमें सम्भवतः कोई ही ऐसा उदाहरण हो, जहां मुसलमान नायिकाने हिन्दू नायकसे विवाह किया हो; परन्तु इसके विपरित आपको शत-प्रतिशत उदाहरण मिल जाएंगे, जहां मुसलमान नायकने हिन्दू नायिकासे ही विवाह किया है । इन सभी बातोंसे कंगना रनौतका कथन उचित चरितार्थ होता है और इस बातसे इस सन्देहको और बल मिलता है कि आमिर खान जैसे लोग १५ वर्षमें ही क्यों सम्बन्ध विच्छेद कर देते हैं ? और क्यों अन्तरधार्मिक विवाहमें बच्चोंके नाम हिन्दू नहीं होते हैं ? (०६.०७.२०२१)

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा बच्चोंको सुसंस्कारित करने हेतु एवं धर्म व साधना सम्बन्धित बातें सरल भाषामें बताने हेतु 'ऑनलाइन' बालसंस्कारवर्गका शुभारम्भ हो चुका है। यह वर्ग

प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होता है। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरणयथाशीघ्र कराएं। इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. दूरदर्शन एवं सिनेमाके आध्यात्मिक प्रभाव - १० जुलाई, रात्रि ९:०० बजे

आ. अध्यात्मका मनुष्य जीवनमें महत्त्व - १४ जुलाई, रात्रि ९:०० बजे

इ. स्नानके लाभ एवं अभ्यंगस्नान - १८ जुलाई, रात्रि ९:०० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार प्रातः, अपरान्ह एवं रात्रिमें 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन होता है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको समय-समयपर 'ऑनलाइन

सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोत्तर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वार संक्षिप्तदैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है । इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

६. यदि आप संस्कृत सीखने हेतु इच्छुक हैं; किन्तु आपको आस-पास कहीं जाकर इसे सीखनेका समय नहीं मिल रहा है, तो आप घर बैठे इस दैवी भाषाको सीख सकते हैं ! उपासनाकी ओरसे यह ‘ऑनलाइन’ संस्कृत वर्ग साप्ताहिक होता है ! जो भी इस भाषाको सीखना चाहते हैं, वे हमें

९३५६७६६२२१ (9356766221) सम्पर्क क्रमांकपर सूचना दें !

७. इंदौर स्थित उपासना प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र हेतु एक पूर्णकालिक आयुर्वेदिक चिकित्सककी आवश्यकता है, जिन्हें वैकल्पिक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियोंका भी अनुभव हो, योग्य व्यक्ति ९७१७४९२५२३ इस क्रमांकपर सम्पर्क करें।

वैदिक उपासना पीठ एक स्वतन्त्र संस्था है । इसके प्रेरणास्रोत सनातन संस्थाके संस्थापक परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले हैं, जिनसे इस संस्थाकी संस्थापिकाने सर्व ज्ञान प्राप्त किया है; इसीलिए कृतज्ञतास्वरूप वैदिक उपासना पीठ, सनातन संस्थाके प्रकाशनको प्रसारित करती है । यदि आप सनातन संस्थासे जुडे हैं तो आप उसीके माध्यमसे साधना करें व उसीमें अपना अर्पण करें, यह विनम्र प्रार्थना है ।

- विश्वस्त, वैदिक उपासना पीठ

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915